REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

कारखानों में काम करने वाली महिला श्रमिकों का अध्ययनः कानपुर महानगर के सन्दर्भ में

शफीकुन निशा
शोध छात्रा, समाज शास्त्र विभाग , डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीयपुनर्वास विश्वविद्यालय , लखनऊ.

संक्षेप

कानपुर नगर उप्र0 की औधोगिक राजधानी है, अतः यहॉ पर कारखाने एवं कारखानों में काम करने वाली महिलाओं की अधिकता है, इन परिस्थितिओं के मद्देनजर उपरोक्त सर्वेक्षण के द्वारा कारखानों में काम करने वाली महिला श्रमिकों का अध्ययन किया जाना एक अत्यंत ही सार्थक विषय है, इस शोध पत्र में शोधार्थी ने इन महिला श्रमिकों की स्थिति के बारे में अध्ययन किया है तथा उस स्थिति को सुधारने के सुझाव प्रस्तुत किये है,

मुख्य शब्दः कामकाजी महिलाएं, कारखाने, कानपुर.

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कानपर के कारखानों में काम करने वाली श्रमिकों की स्तिथि का अवलोकन करना है तथा उस स्तिथि को सुधारने के लिए आवश्यक सुझाव देना है,

अध्यन का क्षेत्र

कानपुर नगर उ0प्र0 का वृहतम नगर है और देश में जनसंख्या के आधार पर यह आठवें स्थान पर आता है (2011) के जनगणना के आधार पर वर्ष 1857 के बाद कानपुर का ओधोगिक विकास तेजी से हुआ जब एलन कूपर कम्पनी ने ब्रिटिश सेना के लिए चमड़ा कारखाने का निर्माण किया, उसके बाद 1862 से कपड़ा उद्योग के महत्व ने इसे 'भारत का मैनचेस्टर' का उपनाम भी दिया जो उस समय अंतरराष्ट्रीय प्रतिमान था। क्रमशः लाल इमली के ऊनी वस्त्र कारखाने, खाद कारखाने, सैनिक साजो–सामान के कारखाने, पान पराग, दुनिया का सबसे बड़ा चमड़ा उद्योग और विविध प्रकार के वस्त्र उधोगो ने इसे कारखानों के नगर का नाम दे दिया जो आज भी प्रचलित है।

कारखानों में महिला सह–भागिता की स्थिति–

वर्तमान वैश्वीकरण अर्थव्यवस्था में महिलायें विश्व का दो–तिहाई कामकरती है। और विश्व की आय का मात्र 10 प्रतिशत ही उनके हिस्से में आता है। देशकी 39.7 करोड़ कार्यरत जनसंख्या में महिला सहभागिता 12.4 करोड़ हैं। इनमें 96 प्रतिशत महिलाएं असंगठित क्षेत्र में आती

है जो कि सोचनीय है। देश की 30 प्रतिशत महिलाएं नगरीय क्षेत्रों में रहती है अतः उन्हें कार्य करने के अवसरों की तलाश रहती है। कारखानों में कार्य करने के अवसर विविधि और अधिक होते है अतः महिलायें अपनी सहभागिता बढ़ाना चाहती हे ताकि वे नगरीय जीवन के अनुकूल आय पा सके।आजीविका हेतु महिला सह–भागिता क्रमशः बढ़ती भी जा रही है किन्तु महिला श्रमिकों को अंसगठित क्षेत्र में कम आय वाले कार्य मिलते है। जिनमे नौकरी की सुरक्षा नहीं होती और सामाजिक सुरक्षा का भी आभाव होता है। उन्हें अक्सर 12 घंटे कार्य करना पड़ना पड़ता है जिसमे स्वास्थ की समस्या होती है और सुरक्षा का आभाव होता है ।

कारखानों में ऐसे कार्यो में जिनमें उत्पाद की संख्या के आधार पर वेतन मिलता है कार्य करने का वातावरण अनुकूल नहीं होता है। महिला श्रमिकों को निकृष्ट समझा जाता है, उनकी क्षमता को कम आंका जाता है तथा उनका उत्पीड़न भी किया जाता है।

वर्ष 2011 में कारखानों में पुरूषों का अनुमात वर्ष 2013 में महिला भागीदारी का अनुपात मात्र 16 प्रतिशत था। 2012–13 में वेतन भोगी पुरूषों का अनुपात 21 प्रतिशत और महिलाओं का अनुपात 13 प्रतिशत के लगभग था। इससे कार्य योग्य महिलाओं को रोजगार के अवसर कम प्राप्त होना सिद्ध होता है।

महानगर में चमड़ा उद्योग की अधिकता जिनमें विविध रोजगार के अवसर मिलते है किन्तु इनमें महिलाओं के लिए विशेष अवसर बहत ही कम हे। कानपुर महानगर में सूती होजरी वस्त्रोद्योगों की भी अधिकता इनमें उत्पाद की संख्या के आधार पर वेतन मिलता है जो कम होता है और अनियमित भी होता है। इसके बाद साबुन के कारखाने है जिनमें महिला श्रमिकों को रोजगार मिलता है सेवा कार्य उद्योगां में कानपुर में कपड़े सिलना महत्वपूर्ण है जिनमे महिलाओं की वरीयता दी जाती है।यह अंसगठित क्षेत्र है अतः उन्हें उचित और लगातार आय नहीं मिलती।

कारखानों में रोजगार के अवसर एवं महिलाएं–

देश में महिलाओं की भागी दारी का अनुपात बढ़ रहा है उनके कार्य करने के अवसर भी, क्योंकि देश में स्नातक स्तर पर महिला भागीदारी अधिक है। ी0एच0डी0 स्तर पर महिला नामांकन लगभग 477 हो रहा है यह संकेत है की रोजगार में महिला सहभागिता के अवसर विविध और अधिक हो रहेहै।स्नातकों की आवश्यकता (अर्थशास्त्र/वाणिज्य/प्रबंधन/भूगोल/समाजशास्त्र आदि) 21वीं सदी के कारखानों की भविष्य तय करने में अनिवार्य होती जा रही है। इस पर वैश्वीकरण भी हाबी हो रहा है।

कानपुर के चमड़ा उघोग की देश में चमड़े के निर्यात में 15 प्रतिशत भागीदारी है जो और भी बढेगी। अतः शिक्षित कर्मकारों की मांग भी बढ़ेगी। महिलाओं की उच्चशिक्षा में बढती भागीदारी को महिलाओं की कारखानों के प्रबंधन मे सहभागिता के बढ़ते अवसर के रूप में देखा जा सकता है। कानपुर महानगर में हस्तशिल्प, हस्तकारी और हस्त कौशल उद्योगों के कारखानों का भविष्य भी उज्जवल है यहॉ का परंपरागत उद्योग भी है। इनमे वस्त्र डिजाईन ,रंग, मिट्टी के बर्तन , दनकी सजावट, संगमरमर नक्काशी, मूर्ति निर्माण ,चरम शोधन जैसे कार्य भी आते है। ऐसे कार्यो में महिलाओं की क्षमता, उनकी सोच ,कुशलता, संगठन, क्षमताके कारण महिला रोजगार के अवसर बढ़ सकते है। वर्तमान समय में कानपुर में उधोगों का विकास पनकी से दादा नगर, कालपी मार्ग, रूमा, चकेरी, जैसे क्षेत्रों में भी हो रहा है।

कानपुर स्मार्ट सिटी परियोजनाः कारखानों में महिला सहभागिता की संभावनाएँ–

इस परियोजना में स्वच्छता के साथ उद्योगों का आधुनिकीकरण, अव–संरचनात्मक विकास आदि भी शामिल किया गया है। गैर पंरपरागत उद्यागों में भोजन प्रवर्धन उद्योग प्रमुख हैं। जिसमे महिलाओ को रोजगार में प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

कानपुर के औधोगिक समूह जैसे जे0जे0 समूह, बी0आर0 समूह, राष्ट्रीय वस्त्राधोग, बेकरी, चरम शोधन, जूता उधोग, काठी उधोग, जीन–साजी उधोग आदि मिल कर कानपुर महानगर में उधोगों का आधुनिकीकरण कर सकते है । इसमें अनिवार्य रूप से कारखानों में महिला

सहाभागिता के अवसर, रोजगार की गुणवत्ता एवं महिला कर्मियों के लिए न्यायसंगत आर्थिक–सामाजिक उन्नत अवसर सृजित होगें और उत्पादकता भी बढेगी।

अनुसन्धान प्रक्रियाः–

इस अनुसंधान के लिए आवश्यक जानकारी प्रथम आंकड़े संकलन के आधार पर की गयी है आंकड़ों में संकलन के लिए बहुस्तरीकृत क्रमरहित प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है मध्यवर्ती एवं प्रतिशत विधियॉ का प्रयोग कर के एकत्रित किये गए आंकड़ो की अर्थपूर्ण एवं विधिवत विवेचना की गयी है। प्राप्त किये गए निष्कर्षो को पाई चार्ट के द्वारा दर्शाया गया है।

प्रतिचयन–

स्तरीकृत क्रमरहित प्रतिचयन

अध्ययन का समय–

उपरोक्त अध्यन मैं आंकड़ो का संकलन फरवरी 2017 से जुलाई 2017 के मध्य किया गया है तथा विवेचना अगस्त 2017 से अक्टूबर 2017 के मध्य की गयी है, अध्ययन का सम्पूर्ण समय फरवरी 2017 से अक्टूबर 2017 तक है।

प्रथम आकड़े

प्रथम आंकड़ो का संकलन कानपुर नगर के विभिन्न कारखानों में काम करने वाली महिलाओं से बातचीत कर के किया गया है, इस अध्ययन में कुल 627 महिलाओं ने भाग लिया।

अध्यन के समय यह भी ज्ञात हुआ कि कम शिक्षा तथा अशिक्षा के कारण बहुत सी महिलाओं ने तो इस अध्यन मे भाग नहीं लिया अन्यथा अध्यन मे सम्मलित महिलाओं की संख्या कहीं अधिक होती।

प्रथम आंकड़े

1. परिवार का आकार

छोटा (2–4)	माध्यम (4–6)	बड़ा (झ6)
56	215	356

प्रस्तुत शोध में अध्ययन में की गयी कुल 627 महिलाओं में से 56 महिलाएं छोटे परिवार से थी जिसमें परिवार के सदस्यों की संख्या 2–4 सदस्य है, 215 महिलाएं मध्यम परिवार से थी जिसमें परिवार के सदस्यों की संख्या 4–6 सदस्य है तथा 356 महिलाएं बड़े परिवार से थी जिसमें परिवार के सदस्यों की संख्या 6 से अधिक है।

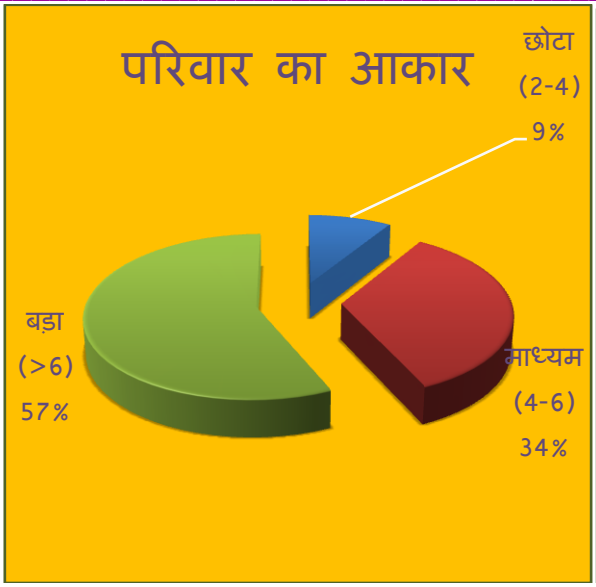

(चित्र संख्या – १)

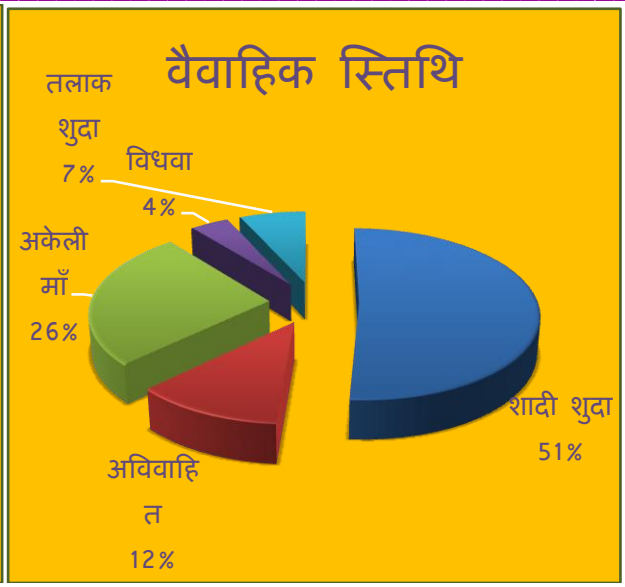

(चित्र संख्या – २)

2. वैवाहिक स्तिथि–

शादी शुदा	अविवाहित	अकेली माँ	विधवा	तलाक शुदा
321	73	165	25	43

प्रस्तुत शोध में अध्ययन में की गयी कुल 627 महिलाओं में से 321 महिलाएं शादी शुदा थी, 73 महिलाएं अविवाहित थीं जिनमे से ज्यादातर की उम्र 18–20 वर्ष की थी, 156 महिलाएं अकेली माँ थीं जिनमे से अधिकतर महिलाओं को उनके पति ने छोड़ दिया था तथा वे अकेले ही अपने ही बच्चों के साथ जीवन यापन कर रही थीं, 25 महिलाएं विधवा तथा 43 महिलाएं तलाक शुदा थी।

3. आय वर्ग–

ढ20साल	20–30साल	30–40साल	40–50 साल	50–60साल	झ60 साल
87	106	137	185	66	46

(सारणी संख्या–3)

प्रस्तुत शोध में अध्ययन में की गयी कुल 627 महिलाओं में से 87 महिलाओं की उम्र 20 साल से कम थी, 106 महिलाओं की उम्र 20–30 साल के बीच में थी, 137 महिलाओं की उम्र 30–40 साल के बीच थी, 185 महिलाओं की उम्र 40–50 साल के बीच थीं, 66 महिलाओं की उम्र 50–60 साल के बीच थी, 46 महिलाओं की उम्र 60 साल से अधिक थी,

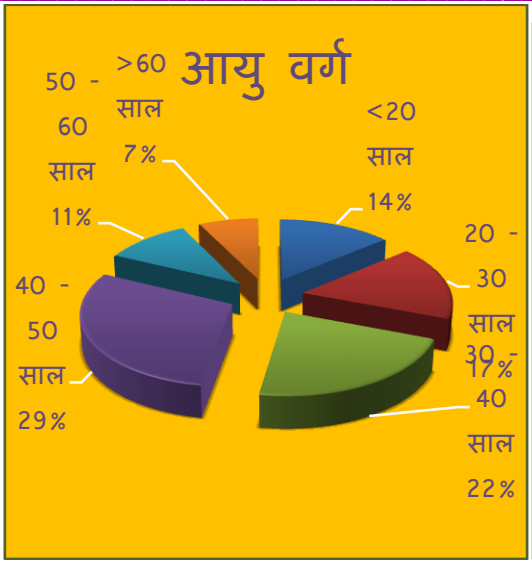

(चित्र संख्या – ३)

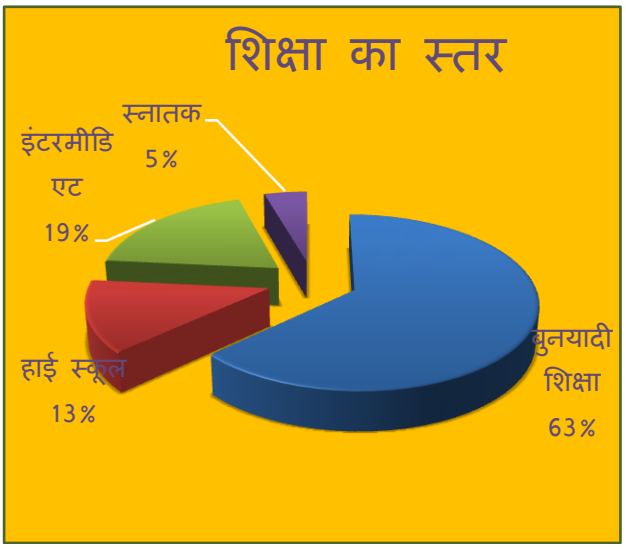

(चित्र संख्या – ४)

4. शिक्षा का स्तर–

बुनयादी शिक्षा	हाईस्कूल	इंटरमीडिएट	स्नातक
316	84	114	28

(सारणी संख्या–4)

5. क्या आप सोचती है की सफल होने के लिए परिश्रम आवश्यक है ?

हाँ	नहीं
537	90

(सारणी संख्या–5)

सर्वेक्षण में अध्ययन की गयी 627 महिलाओं में से 537 महिलाओं का मानना हे की सफलता आवश्यक है

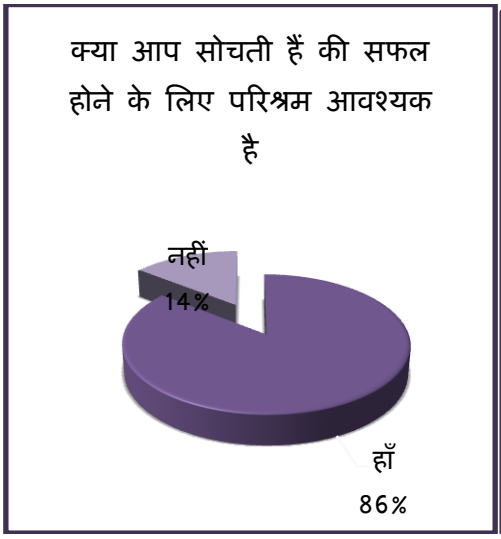

(चित्र संख्या – ५)

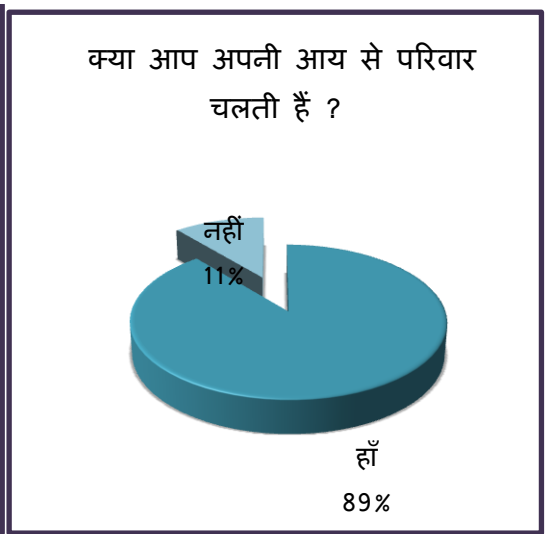

(चित्र संख्या – ६)

6. क्या आप अपनी आय से परिवार चलाती है ?

हाँ	नहीं
558	69

(सारणी संख्या–6)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं मे सें 558 महिलाएं अपनी आय से अपना परिवार चलाती है, यहॉ यह ध्यान देने की आवश्यकता है की ज्यादातर पुरूष अपनी आय व्यसनों पर खर्च कर देते हैं जिसमे शराब, सिगरेट, जुआ तथा अन्य व्यसन शामिलं है।

7. क्या किसी देश के निर्माण के लिए माहिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है?

हाँ	नहीं
610	17

(सारणी संख्या–7)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं मे से 610 महिलाओं का मानना है कि देश निर्माण के लिए महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है इसका असर इस बात से भी दीखता है कि ये मजदूर महिलाएं अपने बच्चों का काम की जगह स्कूल भेजना ज्यादा उचित समझती है।

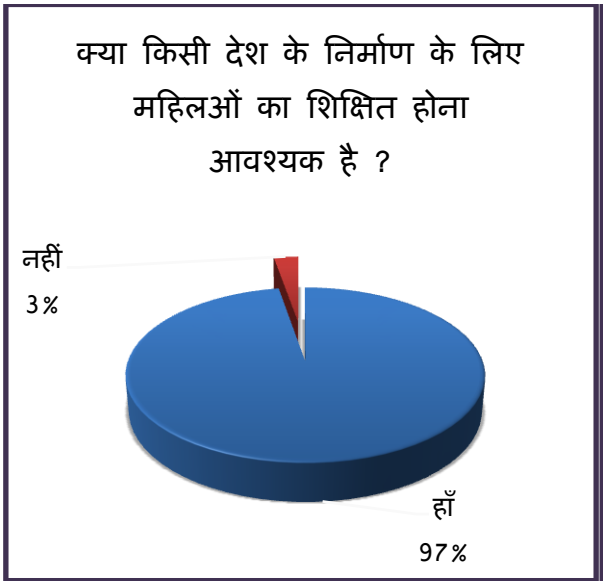

(चित्र संख्या – ७)

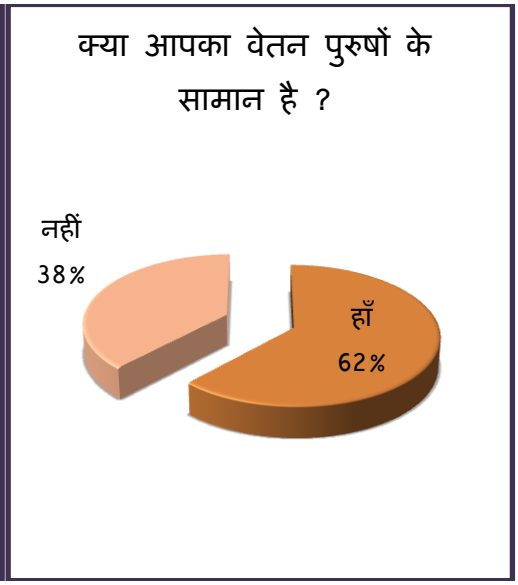

(चित्र संख्या – ८)

8. क्या आपका वेतन पुरूषों के समान है ?

हाँ	नहीं
389	238

(सारणी संख्या–8)

सर्वेक्षण में अध्ययन की गयी 627 महिलाओं में से 389 महिलाओं का मानना है कि उनका वेतन पुरूषों के समान है परन्तु 238 महिलाओं का मानना है की पुरूषों को उनसे ज्यादा वेतन मिलता है।

9. क्या आपके साथ पुरूषों के सामान ही व्यवहार किया जाता है ?

हाँ	नहीं
350	277

(सारणी संख्या–9)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं में से 350 महिलाओं का मानना है कि उनके साथ पुरूषों के सामान ही व्यवहार किया जाता है परन्तु 277 महिलाओं का मानना है की पुरूषों को उनसे ज्यादा वेतन मिलता है, इस प्रश्न के उत्तर पर ज्यादातर महिलाऐं अस्पष्ट थीं जिसका कारण यह है की इन महिलओ ने इसके बारे में कभी सोचा ही नहीं या कह सकते है कि इन महिलाओं का शिक्षा का स्तर इतना निम्न है की वो इसके बारे सोच ही नहीं सकती है।

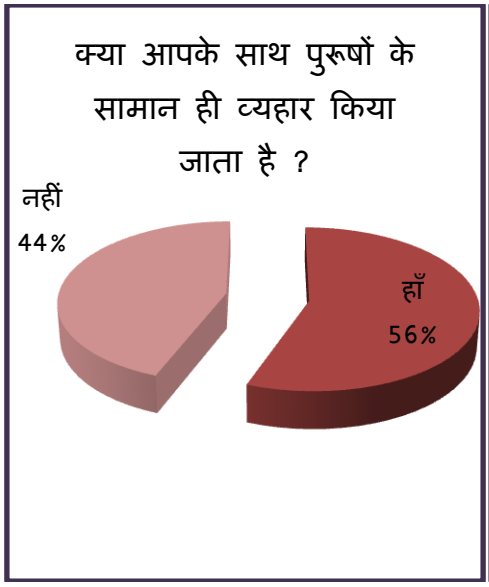

(चित्र संख्या – ९)

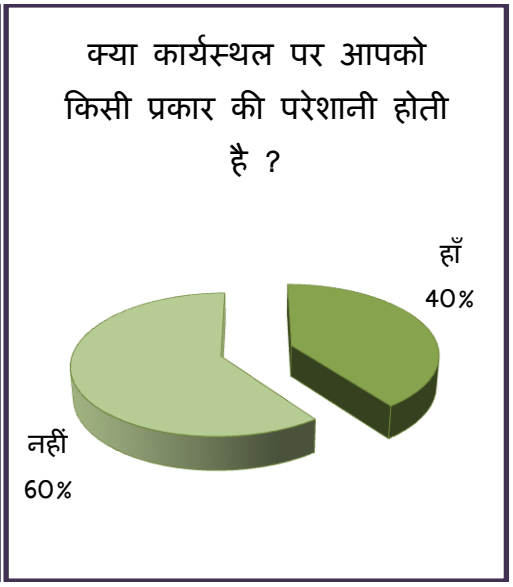

(चित्र संख्या – १०)

10. क्या कार्यस्थल पर आपको किसी प्रकार की परेशानी होती है ?

हाँ	नहीं
250	238

(सारणी संख्या–10)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं में से 377 महिलाओं का मानना है कि कार्यस्थल पर उनको किसी प्रकार की परेशानी नही होती है, परन्तु 250 महिलाओं का मानना है कि उन्हें कार्यस्थ्ल पर परेशानी होती है जब उनसे यह पूछा गया की किस प्रकार कि परेशानी होती है तो उनके पास कोई सही उत्तर नही था।

11. क्या आपको पूरा वेतन मिलता है ?

हाँ	नहीं
312	315

(सारणी संख्या–11)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं में से 312 महिलाओं का मानना है कि कार्यस्थल पर उनको पूरा वेतन मिलता है, वहीं 315 महिलाओं का मानना है कि कार्यस्थल पर उनको पूरा वेतन नही मिलता है।

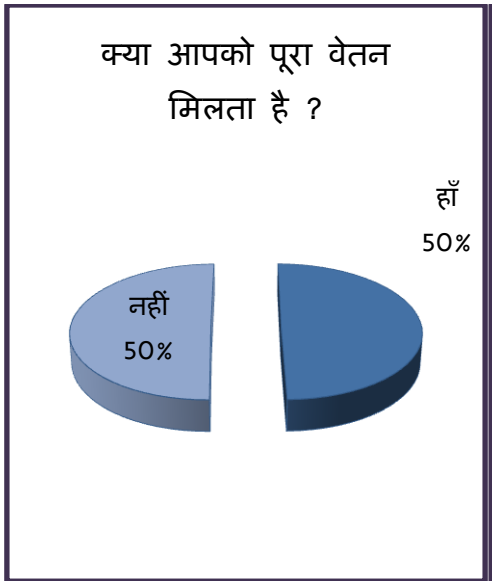

(चित्र संख्या – ११)

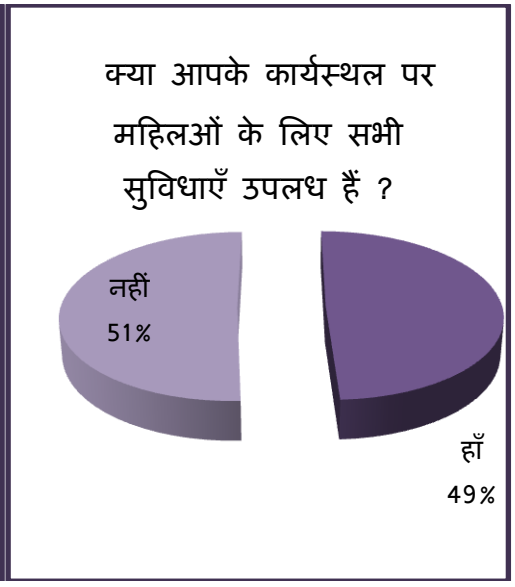

(चित्र संख्या – १२)

12. क्या आपके कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए सभी सुविधाएं उपलध है?

हाँ	नहीं
309	318

(सारणी संख्या–12)

सर्वेक्षण में अध्ययन की गयी 627 महिलाओं का मानना है कि कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध है वही 318 महिलाओं का मानना है। कि कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध नहीं है

13. क्या कार्यस्थल पर भारत सरकार या राज्य सरकार द्वारा बनाये गए नियमों का पालन होता है।

हाँ	नहीं
309	318

(सारणी संख्या–13)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं में से 309 महिलाओं का मानना है कि कार्यस्थल पर भारत सरकार या राज्य सरकार द्वारा बनाये गये नियमों का पालन होता है 318 महिलाओं का मानना है कि कार्यस्थल पर भारत सरकार या राज्य सरकार द्वारा बनाये गए नियमों का पालन नही होता है।

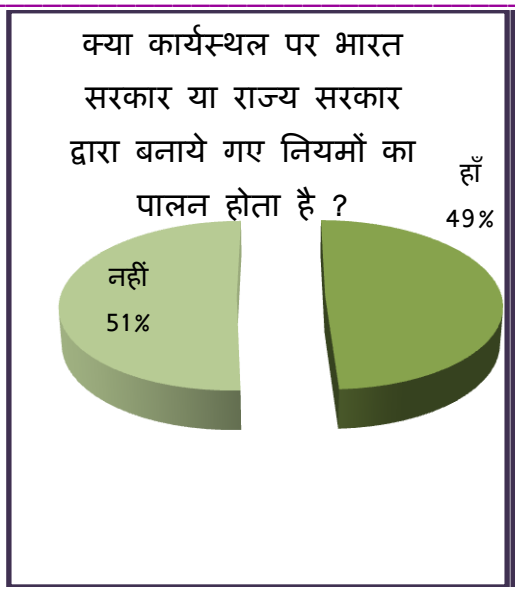

(चित्र संख्या – १३)

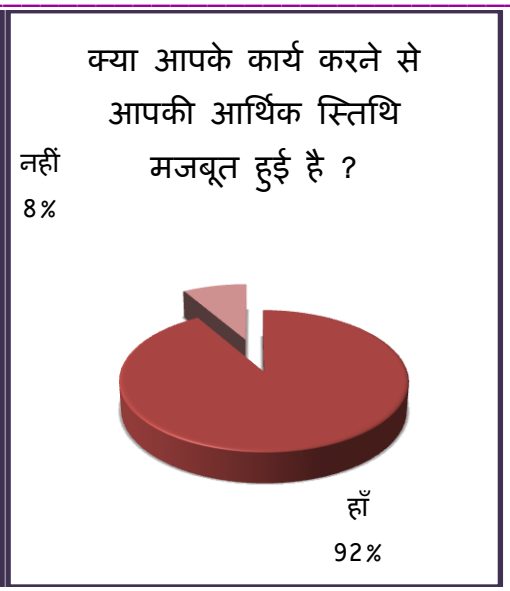

(चित्र संख्या – १४)

14. क्या आपके कार्य करने से आपकी आर्थिक स्तिथि मजबूत हुई है?

हाँ	नहीं
574	53

(सारणी संख्या–14)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं में से 574 महिलाओं का मानना है कि उनके कार्य करने से उनकी आर्थिक स्तिथि मजबूत हुई है वहीं 53 महिलाओं का मानना है उनके कार्य करने से उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं हुई है।

15. पारिवारिक निर्णयों में आपकी सहभागिता होती है की नही?

हाँ	नहीं
214	413

(सारणी संख्या–15)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं में से 214 महिलाओं का मानना है कि पारविारकि निर्णयों मे उनकी सहभागिता होती है वही 413 महिलाओं का मानना है कि पारिवारिक निर्णयों में उनकी सहभागिता नही होती है

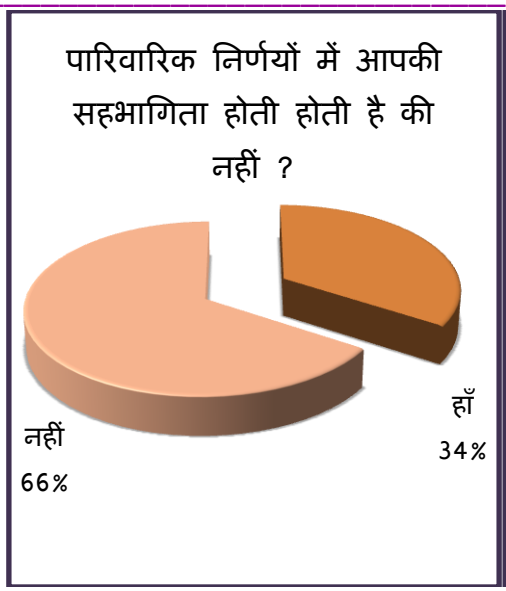

(चित्र संख्या – १५)

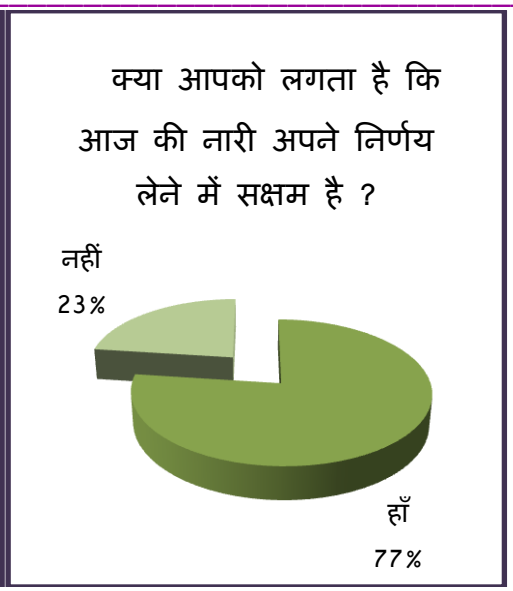

(चित्र संख्या – १६)

16. क्या आपको लगता है कि आज की नारी आज अपने निर्णय लेने मे सक्षम है ?

हाँ	नहीं
483	144

(सारणी संख्या–16)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं में से 483 महिलाओं का मानना है कि आज की नारी अपने निर्णय लेने में सक्षम है वहीं 144 महिलाओं का मानना है आज की नारी निर्णय लेने में सक्षम नहीं है

17. क्या आप अपने कार्य से संतुष्ट है ?

हाँ	नहीं
609	18

(सारणी संख्या–17)

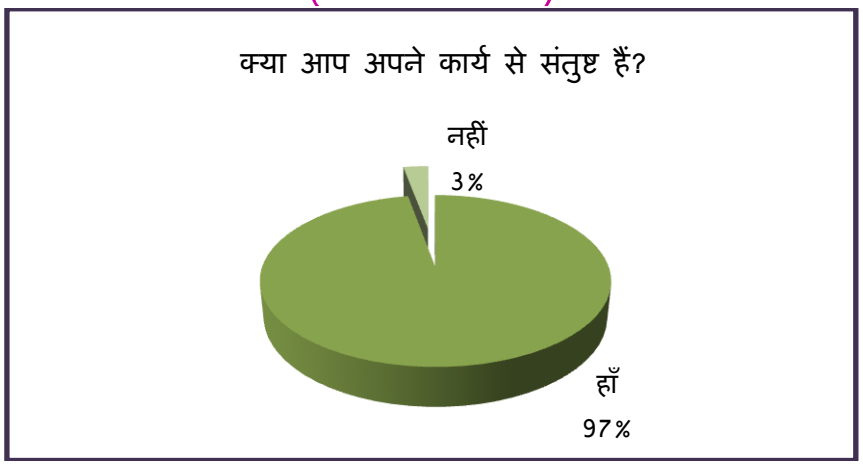

(चित्र संख्या – १७)

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओ में से 609 महिलाओं का मानना हे कि आज की नारी निर्णय लेने में सक्षम है, वहीं 18 महिलाओं का मानना है आज की नारी अपने निर्णय लेनें में सक्षम नहीं है।

18. कार्यस्थल पर महिला होने के नाते आपका किसी प्रकार का (शरीरिक , मानसिक, अथवा, आर्थिक शोषण) होता है या नहीं यदि शोषण होता है तो किस प्रकार शोषण होता है।

सर्वेक्षण में अध्यन की गयी 627 महिलाओं में से ज्यादातर को शोषण का वास्तविक अर्थ नहीं पता है, अतः काररवाने में होने वाले शरीरिक ,मानसिक अथवा आर्थिक शोषण को ये महिलाऐं शोषण न समझकर इन्हें अपने दैनिक दिनचर्या का हिस्सा समझती है।

19. कार्य करने के कितने घंटे निर्धारित है ?

जहॉ तक कारखानों में काम करने वाले घंटो के निर्धारित होने का सवाल है कानपुर के समस्त कारखानों में 8 घंटे की कार्य पाली है और यह सभी कारखानों में एक सामान है।

निष्कर्ष–

समाज को महिला श्रमिकों को सामाजिक रूपांतरण के सक्रिय प्रवर्तक की दृष्टि से देखना चाहिए। उनमे निहित आर्थिक विकास की अपार क्षमता को पहचान कर उन्हें उपयुक्त कार्यकारी वातावरण देना चाहिए।

यह भी रेखाकिंत करना होगा कि कारखानों में कार्य करने वाली महिला श्रमिकों की कठिनाईयों के निराकरण हेतु अनेक उपाय शासकीय स्तर पर किये गए है, लैगिक भेदभाव को करने हेतु नियम– परिनियम बनाये गए है, जो सराहनीय तो है किन्तु उनकी प्रभावी क्षमता कार्य –रूप लेती कम दिखाई देती है।

कुल मिलकर एक ऐसा वातावरण गठित होना आवश्यक है जिसमें महिलाओं का परिवार, समाज एवं देश में बराबरी का दर्जा मिले तथा जो महिला शसक्तीकरण के प्रयासों को अनुप्राणित कर सके।

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए इस अध्यन के दौरान कानपुर के विभिन्न कारखानों में काम करने वाली महिलाओं का सर्वेक्षण निम्न बिन्दुओं पर किया गया,, इस सर्वेक्षण में कानपुर के विभिन्न कारखानों में काम करने वाली 627 महिलाओं का सर्वेक्षण किया गया तथा उनसे मिलने वाले उत्तरों की विवेचना करने के बाद हमें उपरोक्त निष्कर्ष प्राप्त हुयें।

सन्दर्भ–

Singh .S.N (1990) : Planning and Development of an Industrial Town : A Study of Kanpur, Mittal Publication , New Delhi.

Statistical Profile On Women Labour, 2009-2011 Labour Bureau Ministry Of Labour & Employment Goverment Of India Chandigarh/Shimla.

ब्राजेन, येल, 1954 ''डिटरमिनेन्ट्स ऑफ आन्त्रप्रेन्योरियल एबिलिटी'' सोशल रिसर्च एसोशिएशन, वॉल्यूम 21, पेज 238।

दुबे, एस.सी., 1986 विकास का समाजशास्त्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

आस्टरगार्ड, एल., 1994, जेनडर एण्ड डेवलपमेण्ट लंदन, रूटलेज

सेठ, एन.आर., 2004, दी फील्ड ऑफ लेबर, सोशियोलॉजिकल बुलेटन, वॉल्यूम 53

शफीकुन निशा
शोध छात्रा, समाज शास्त्र विभाग , डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीयपुनर्वास विश्वविद्यालय ,लखनऊ.